



दिशा

संयुक्तांक 2020-21



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची- 834002

दिशा

स्वलेखन से अलंकृत, प्रतिभाओं का संस्मरण,
भावनाओं अनुभूतियों का श्रृंखलाबद्ध अनुकरण,
हिन्दुस्तानी संस्कृति का गौरवान्वित विवरण
इन्हीं से आलोकित एवं सुशोभित है
“दिशा” के संयुक्तांक-2020-2021 का संस्करण

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची- 834002



- ❖ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- ❖ मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- ❖ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ❖ अशुद्धियों से घबराए नहीं।
- ❖ अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।
- ❖ हिन्दी पढ़ें, हिन्दी लिखें, हिन्दी का सम्मान करें।
- ❖ हिन्दी में काम बहुत ही आसान, समझना आसान तथा समझाना आसान।



दिशा परिवार



श्री चन्द्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार



श्री फैजान अहमद
वरीय उप महालेखाकार
(प्रशासन)



श्री अरूण मिंज
वरीय उप महालेखाकार
(पेंशन)



श्री भरत चन्द्र बेहेरा
उप महालेखाकार
(लेखा, जी.ई. कार्य एवं वन)



श्री अर्जुन चौधरी
प्रधान संपादक
(वरीय लेखा अधिकारी)



श्री मनोज कुमार
वरीय लेखा अधिकारी



श्री अशोक सिंह
सहायक लेखा अधिकारी



श्री उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखाकार



श्री सदानंद चौधरी
सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक



डॉ. शिप्रा शालिनी आईद
हिन्दी अनुवादक

हिन्दी पखवाड़ा 2021 की झलकियाँ



वरीय उप महालेखाकार महोदय

हिन्दी टिप्पण प्रतियोगिता-2021

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते प्रतिभागी



दिशा

संरक्षक

श्री चन्द्र मौलि सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची

परामर्श दातृ समिति

श्री फैज़ान अहमद
वरीय उप महालेखाकार
(प्रशासन)

✱

श्री अरूण मिंज
वरीय उप महालेखाकार
(पेंशन)

✱

श्री भरत चन्द्र बेहेरा
उप महालेखाकार
(लेखा, जी.ई. कार्य एवं वन)

प्रधान संपादक

श्री अर्जुन चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार
वरीय लेखा अधिकारी

✱

श्री अशोक सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

✱

श्री उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखाकार

संपादकीय सहायक

श्री सदानंद चौधरी

सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक हिन्दी कक्ष

डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द

हिन्दी अनुवादक

स्वत्वाधिकार :
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची



प्रकाशन :
दिशा (हिन्दी वार्षिक पत्रिका)



प्रकाशक :
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची



अंक :
'संयुक्तांक 2020-2021'



मूल्य :
“राजभाषा के प्रति निष्ठा”



मुद्रण :
नेक्स्ट प्रिन्ट, राँची



आवरण :
कार्यालय भवन

पत्रिका में छपी रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।
रचनाकारों के विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक की कलम से....



बसंत ऋतु के आगमन के साथ हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका दिशा संयुक्तांक 2020-21 आपके कर कमलों तक पहुँचाने में मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। कोविड-19 महामारी के बीच भी हमारे कार्यालय के रचनाकारों द्वारा विविध प्रकार की रोचक लेख, कहानियाँ एवं ज्ञानवर्धक सामग्रियाँ इस पत्रिका के माध्यम से प्रोसी गई है, जो जीवन की यथार्थता को दर्शाती है।

उन सभी रचनाकारों को मेरा तहे दिल से धन्यवाद, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर 'दिशा' के कलेवर को आकर्षक और समृद्ध बनाया है। साथ ही साथ 'दिशा संयुक्तांक 2020-21' के सफल प्रकाशन में समस्त संपादक मंडल, जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान दिये हैं, उनको भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय में हिंदी में काम-काज के साथ-साथ हिन्दी के विकास एवं प्रसार-प्रचार में हमारी पत्रिका सार्थक साबित होगी।

श्री चन्द्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची



संपादकीय.....



गृह पत्रिका दिशा संयुक्तांक 2020-21 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मेरा मन प्रफुल्लित हो रहा है। कार्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में विभागीय हिन्दी गृह पत्रिकाओं की अहम् भूमिका है। भाषा केवल शिक्षा का माध्यम न होकर संस्कृति का वाहक भी है। राष्ट्रहित, भारतीय संस्कृति के विकास को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हमें राजभाषा हिन्दी का प्रयोग वार्तालाप, पत्राचार एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिक से अधिक करना चाहिए।

मैं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने प्रेम एवं सम्मान का परिचय देते हुए अपनी रचनाएं पत्रिका में प्रकाशन के लिए समर्पित किया है।

साथ ही साथ पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के पीछे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी संपादक मंडली एवं सह-सम्पादकीय मंडली को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि आगे भी उनसे इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

अर्जुन चौधरी
प्रधान संपादक

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकार	पृष्ठ	रचनाकार, पदनाम (सर्वश्री)
1.	आ, अब लौट चलें	लेख	1	श्री हेनरी रोजारियो से.नि.व.ले.अ.
2.	शादी के रीति-रिवाज में परिवर्तन	कहानी	4	श्री जीतवाहन गुप्ता (लिपिक)
3.	गजल	गजल	6	श्री हिमांशु पाण्डेय स.ले.अ.
4.	मां की याद	कविता	7	श्री राहुल कुमार (डी.ई.ओ)
5.	कोरोना काल में आयुर्वेद की भूमिका	लेख	9	श्री उमेश कुमार ओझा व. लेखाकार
6.	तिरंगा हमारी शान है	कविता	11	श्री कैलाश मोदी C/O श्री धनंजय प्रसाद बरनवाल
7.	उलझन	कविता	13	श्री प्रवीण कुमार सिन्हा डी.ए.ओ.
8.	कोरोना से जंग	लेख	14	श्री हेनरी रोजारियो (से.नि.व.ले.अ)
9.	ऐसा भी होता है	कविता	16	श्री जीतवाहन गुप्ता (लिपिक)
10.	मेरी माँ	कविता लेख	17	डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द
11.	सीनियर सीटीजन्स		18	श्री विजय किशोर प्रसाद (से.नि. नि.स.(लेखापरीक्षा कार्यालय)
12.	देर हो सकती है पर	कविता	21	श्री कैलाश मोदी C/O श्री धनंजय प्रसाद बरनवाल

13.	रफ़ता-रफ़ता जिंदगी	कविता	22	श्री सुभाष चन्द्रगुप्ता स.ले.अ.
14.	एक गृहिणी की दिनचर्या कहानी	कविता	23	श्री आलोक कुमार स.ले.प.अ.
15.	पीपल का पेड़	लेख	25	श्री हिरेन्द्र कुमार झा से.नि. (पर्यवेक्षक)
16.	मत निकल	कविता	29	श्री बिन्चु कुमार (लेखाकार)
17.	प्रतिकृति	प्रेरक प्रसंग	30	श्री निखिल नितेश द्वारा डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द

आ अब लौट चलें



श्री हेनरी रोजारियो

सेवानिवृत्त वरीय लेखा अधिकारी

पिता ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का सृजन किया। स्वर्ग में उन्होंने दूतों तथा पृथ्वी में मनुष्य, पशु-पक्षी, समुद्र, नदियाँ एवं जलचर, विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे एवं जन्तुओं की रचना की। पृथ्वी में रहनेवाले के जीवन के लिए उन्होंने वायु, आकाश, सूरज, तारामण्डल इत्यादि की भी रचना की। जैसे-जैसे मनुष्यों की संख्या में वृद्धि हुई उनका झुकाव पाप की ओर जाने लगा। वे सत्य की ज्योति की अपेक्षा अंधकार को ज्यादा पसंद किए क्योंकि उनके कर्म बुरे थे। दूसरी ओर, स्वर्ग में दूतों के नायक, लूसीफर, जो देखने में बहुत सुंदर थी एवं उसके सहयोगी, ईश्वर के साथ बगावत किया क्योंकि वे अपने को ईश्वर के सदृश मानने लगे। ईश्वर की सेना ने युद्ध में उन्हें परास्त किया और पृथ्वी में धकेल दिया। जब लूसीफेर एवं उसकी सेना पृथ्वी में उतरे तो उन्होंने अपने जीवन का एक ही मकसद बनाया कि मनुष्यों को पापों के जाल में फँसाया जाए। इस तरह मनुष्य पाप के दलदल में बुरी तरह फँसता गया।

जब मनुष्य का पाप ईश्वर के लिए असहनीय हो गया तो ईश्वर ने इस जगत का विनाश करना चाहा। उस समय नूह एक व्यक्ति था जो सदाचारी तथा निर्दोष था एवं ईश्वर के मार्ग में चलता था। नूह के तीन पुत्र थे- सेम, हाम और याफेत। ईश्वर ने नूह से कहा “मैंने सब शरीरधारियों को विनाश करने का संकल्प किया, क्योंकि उसके द्वारा संसार पाप एवं हिंसा से भर गया है। तुम अपने लिए गोफर वृक्ष की लकड़ी का पोत बना लो। उस पोत में कक्ष बनाना और उसमें भीतर-बाहर डामर लगा देना। पोत तीन सौ हाथ लंबा, पचास हाथ चौड़ा और तीस हाथ ऊँचा हो। उस पोत के उपर चारों ओर एक हाथ ऊँची एक खिड़की बनाना। पोत में एक दरवाजा बनाना और उस में नीचे की, बीच की और ऊपर की मंजिल बनाना, क्योंकि मैं पृथ्वी पर आकाश के नीचे के सब शरीरधारी प्राणियों का विनाश करने के लिए जलप्रलय भेजूँगा। जो कुछ पृथ्वी पर है, वह सब नष्ट हो जाएगा। परन्तु मैं तुमसे अपना नाता रखूँगा। तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे पुत्रों की पत्नियाँ, सब तुम्हारे साथ पोत में प्रवेश करेंगे। सब प्रकार के प्राणियों/जीव-जन्तुओं के नर-मादा का एक-एक जोड़ी पोत में ले आना, जिससे वे भी तुम्हारे साथ जीवित रहें। अपने साथ सब प्रकार के भोज्य पदार्थ ले लेना और उन्हें संचित

रखना जो उसके भोजन के काम आयेंगे”। नूह ने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया। इसके बाद चालीस दिन और चालीस रात पृथ्वी पर वर्षा होती रही। पानी बढ़ता गया और पोत को पृथ्वीतल से ऊपर उठाता गया। पानी बढ़ते-बढ़ते पृथ्वी पर फैलता गया और पोत पानी की सतह पर तैरने लगा। पृथ्वी पर पानी इतना अधिक बढ़ गया कि उसने आकाश के नीचे से सभी ऊँचे से ऊँचे पर्वतों को भी ढंक लिया। तब पृथ्वी पर रहने वाले सब शरीरधारी मर गए—क्या पक्षी, क्या पशु, क्या जंगली जानवर, विचरने वाले कीड़े—मकोड़े तथा सब मनुष्य भी। बच गया केवल नूह और वे जो उसके साथ पोत में थे। ईश्वर ने नूह और उसके साथ पोत के सब जंगली जानवरों और सब पशु पक्षियों का ध्यान रखा। ईश्वर ने पृथ्वी पर हवा बहायी और पानी घटने लगा। आकाश से होने वाली वर्षा रूक गयी थी। तब पृथ्वी पर धीरे-धीरे पानी कम होने लगा। एक सौ पचास दिन के बाद पानी घट गया। तब ईश्वर ने नूह से कहा, “अब तुम अपनी पत्नी, अपने पुत्रों और अपने पुत्रों की पत्नियों के साथ बाहर आओ। प्रत्येक प्राणी को—पशुओं, पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जन्तुओं को बाहर ले आओ। वे पृथ्वी पर फैल जायें, फलें—फूलें और पृथ्वी पर अपनी-अपनी जाति की संख्या बढ़ाये। सब कुछ ऐसा ही हुआ। इस प्रकार नूह एवं उसके परिवार से मनुष्यों की संख्या की वृद्धि होने लगी और नूह द्वारा बनाए गए जीव-जन्तुओं एवं पशु पक्षियों से उसकी संख्या बढ़ने लगी। ईश्वर को यह प्रलय अच्छा नहीं लगा इसलिए उन्होंने एक विधान निकाला कि अब से कोई भी प्राणी जलप्रलय से नष्ट नहीं होगा। इस विधान की पुष्टि के लिए उन्होंने चिन्ह स्वरूप बादलों के बीच अपना इन्द्रधनुष रख दिया।

इस घटना के बाद सोदोम और गोमोरा नगरों में मनुष्यों ने फिर से कुकर्म करना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे स्थिति इतनी बिगड़ गयी कि उन नगरों में दस आदमी भी निर्दोष नहीं पाए गए। ईश्वर ने आकाश से आग और गन्धक बरसायी। उसने उन नगरों को, सारी घाटी को, उसके समस्त निवासियों को और उसके सभी पेड़-पौधों को नष्ट कर दिया।

पिता ईश्वर ने यह महसूस किया कि पृथ्वी में प्रलय करना अथवा ध्वंस करना उचित नहीं है क्योंकि मनुष्यों की प्रवृत्ति पाप की ओर है और पाप करने से वे पाप का दास हो गए हैं। धीरे-धीरे मनुष्यों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। उन्होंने अपने पापों को धोने के लिए बलि प्रथा को अपनाया। याजक लोग पशु अथवा पक्षी के बलि चढ़ाते थे और उसके रक्त से मनुष्यों के पापों के धोने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। जो लोग अपने पापों का पश्चाताप नहीं करते थे और जब उनकी मृत्यु हो जाती थी तो उनके जीवन का विनाश हो जाता था। उस समय मृत्यु जीवन का अंत था।

पिता ईश्वर ने सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्यों से तथा इस जगत से बेहद प्रेम किया है। उन्होंने इस जगत के उद्धार के लिए अपने एकलौते पुत्र को इस संसार में भेजा जो पवित्र आत्मा की कृपा से माता मरियम के गर्भ से जन्म लिया और जिसका नाम येशु रखा गया जिसका अर्थ है मुक्तिदाता। येशु तीस साल तक अपने पिता योसेफ के साथ बढ़ई का काम करते थे। तीस साल की उम्र में उन्होंने योन बपतिस्ता से बपतिस्मा लिए और अपना मिशन कार्य प्रारंभ किए। वे घूम-घूम कर इस्त्राएल, कफरनाहुम, गलीलिया, नाजरेत, बेटेसदा, येरूसलेम इत्यादि प्रदेशों में लोगों को सुसमाचार देने लगे। बहुत सारे अंधे, रोगी, कोढ़ी बहरे उनके पास आते थे जिनको उन्होंने चंगा किया। मृतक लोगों को उन्होंने जिलाया और कई आश्चर्यजनक कार्य किए। बहुत लोगों ने उन पर विश्वास किया परंतु कुछ शास्त्री और फरीसी उनके विरुद्ध हो गए। तैंतीस साल की उम्र में येशु को गेतसेमनी बारी में शाम के समय पकड़ लिया गया, रात भर उन्हें घोर यंत्रणा दी गई, उसके सिर पर काँटों का मुकुट पहनाया गया और उनका मजाक उड़ाया गया। दूसरे दिन उन्हें भारी क्रूस ढोने के लिए दिया गया जिसे येशु ने पहले चूमा और मौन होकर वे क्रूस ढोते हुए कलवारी पर्वत की ओर जाने लगे। येशु का शरीर लहुलुहान हो गया

था। वे इतना निर्बल हो गये थे कि मुश्किल से चल सकते थे। उस पर भी वे निष्पूर लोग उन्हें कोड़े से मारते थे कि वे जल्दी पहुँचे। रास्ते में येशु तीन बार क्रूस के साथ भूमि पर गिर पड़े और किसी तरह वे कलवारी पर्वत पर पहुँचे। जहाँ उनके हाथों एवं पैरों को कीलों से ठोंका गया और क्रूस पर लटकाया गया। क्रूस पर तीन घंटे असहनीय कष्ट झेलने के बाद येशु ने पुकार कर अपने पिता से कहा, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं”। इसके बाद उन्होंने कहा कि मैं प्यासा हूँ तो एक सैनिक ने खट्टी सिरका में रूई को डुबाकर उसे चखने को दिया और उनकी छाती को बरछी से छेद कर दिया। तुरंत उनकी छाती से जल तथा खून की धारा बहने लगी। येशु ने अपना सर झुका कर कहा, “अब सब कुछ पूरा हुआ”। इसके उपरान्त येशु ने अपने प्राण त्याग दिये। येशु के चेलों ने उनके शव को एक खाली कब्र में रख दिया। कुछ यहूदियों ने उस कब्र के मुख में एक बड़ा सा पत्थर रख दिया और कुछ सैनिकों को कब्र की रखवाली करने के लिए तैनात कर दिया। येशु के मृत्यु के तीसरे दिन, बड़े सवेरे, उनका पुनरुत्थान हुआ। वे मुरदों में से जी उठे और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर उन्होंने मानव जाति के लिए स्वर्ग का रास्ता खोल दिया। अपने जी उठने के बाद येशु ने अपने चेलों को कई बार अपना दर्शन दिये और उनके साथ भोजन भी किये। जी उठने के चालीस दिन के बाद वे स्वर्ग चले गए और आज अपने पिता के दाहिने ओर विराजमान हैं।

येशु का जन्म, मृत्यु और पुनरुत्थान हमें यह प्रकट करता है कि मृत्यु जीवन का विनाश नहीं, बल्कि जीवन का विकास है। हमारा जीवन अनन्त है। येशु ईश्वर के पुत्र होने पर भी उन्होंने अपने को ईश्वर के बराबर कभी नहीं माना और जीवन भर दीन हीन बने रहे। वे मृत्यु तक अपने पिता के आज्ञाकारी बने रहे और क्रूस का मरण स्वीकार किया। उन्होंने अपने रक्त द्वारा इस संसार के सभी लोगों के पापों को धो डाला और हमारे रोगों का अपने उपर उठा लिया। उनके घावों द्वारा हम भले चंगे हो गए हैं। उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर, हम सब के लिए स्वर्ग का रास्ता खोल दिया है। पिता ईश्वर किसी भी मनुष्य की मृत्यु पर प्रसन्न नहीं होते हैं। मनुष्य के पाप सिंदूर की तरह लाल क्यों न हो, जब कोई मनुष्य ईश्वर पर विश्वास कर के अपने पापों के लिए सच्चा पश्चाताप करता है तो प्रभु उसके पापों को धोकर हिम की तरह उज्ज्वल कर देते हैं और उन्हें क्षमा कर देते हैं। पूरब पश्चिम से जितना दूर है, प्रभु हमारे पापों को हमसे उतना ही दूर करते देते हैं। पश्चातापी मनुष्य जब अपना पुराना स्वभाव छोड़कर पापरहित जीवन जीने लगता है और उसकी मृत्यु हो जाती है तो स्वर्ग में उसका आनंद के साथ स्वागत किया जाता है। अतः प्रत्येक मनुष्य को अपने अंतःकरण में यह विचार करना है; आ अब लौट चलें।



शादी के रीति रिवाज में परिवर्तन



जीतवाहन गुप्ता

लिपिक

काँची गाँव में एक किसान रहता था उसका नाम रामू था वे अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहते थे। उसकी एक शांति नाम की बेटी थी। बेटी बहुत ही सुन्दर थी। वे पढ़ने के साथ-साथ काम-काज में भी हाथ बटांती थी। रामू मेहनती के साथ-साथ ईमानदार भी था। जिसके चलते सभी गाँव वाले उसे बहुत मानते थे। उसकी बेटी बड़ी होने पर उसके लिए वर खोजने लगा। बहुत दिनों के बाद एक लड़का मिला। रामू उस लड़के के साथ रिश्ता तय कर शादी का दिन तय किया गया। सभी गाँव वाले शादी की तैयारी में जुट गए, ताकि रामू को शादी में परेशानी ना हो। चारों ओर मंगल गीत गाने लगे। खुशी से ढोलक बजाने लगे। गाँव वाले हर दिन की तरह उसे सहायता की बात करने लगे, ताकि रामू अपने को अकेला ना समझे। गाँव वाले एक परिवार की तरह हो गए। रामू को हर कोई कुछ ना कुछ देने लगा।

एक समय था, न ही गाँव में और ना ही गाँव के आस पास में टेंट हुआ करते थे। कोई भी पारिवारिक कार्यक्रम होता तो, गाँव से ही सभी समान जुटाया जाता था। बिस्तर, तकिया, खाट, दरी, दूध, दही बहुत ही कम चीज शहर से लानी पड़ती थी। सामाजिक उदार का भाव था। आज इसकी तो कल उसकी बारी के जिम्मदारी का अहसास था। बारात आती तो पूरा गाँव पाव पर खड़ा रहता। पूरा गाँव ही एक घर बन जाता था। बुजुर्ग लोग भी बिना खाये ही मेहमानों के स्वागत में खड़े रहते थे। जब तक गाँव की बच्ची के फेरे पूरी नहीं हो जाती। ऐसा लगता था जैसे शादी कोई शादी न होकर सामाजिक एकता का मेला हो।

समय-समय के साथ रीति रिवाज भी बदलने लगा। टेंट आया जमीन में खिलाने की जगह कुर्सी टेबल आने लगा। अब खुद खिलाने के जगह में वेटर प्रथा आने लगी। अब बाराती आने की मामूली

रीति रिवाज अदायगी करने लगे। जब बाराती आई तो उसको भिखारी की तरह लाईन में वेटरों से खाना मांगना पड़ा। अब किसी को कोई जिम्मेदारी का एहसास नहीं था और ना ही सामाजिकता का भाव। अब केवल सब जगह पैसा का बोल बाला, ना बराती की पहचान, ना ही सराती की ही पहचान। घर में, गाँव में शादी करने के बजाए होटलों एवं धर्मशाला की चकाचौंध ने जगह ले ली। अब गरीबों को जगह नहीं मिलती क्योंकि उकसे पास इतना पैसा ही नहीं होता कि वे इसे बुक करा सकें। इस चकाचौंध की रोशनी के साथ कोकाकोला फेंटा तथा थम्स-अप का चलन होने लगा। कोई लस्सी पीना पसंद नहीं करता। खाने का समान भी बर्बाद होने लगा। इस शादी में अन्न की कीमत भी कोई समझने नहीं लगा। जितना भी खाना बनता, वे सारे के सारे पश्चिमी सभ्यता का होता। अब हम लोगों को विदेशी खाना अच्छा लगने लगा। अब हमलोगों को स्वदेशी की जगह विदेशी खाना पसंद हो रहे हैं। भले ही पेट को नुकसान हो।



गजल



हिमांशु पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

बीज मत रोपो भले ही, जो लगे हैं उनको सींचो,
चढ़ना जो चाहो शिखर पर, पग नहीं तब हाथ खींचो।

जिंदगी में खुशियाँ चाहो, या चाहो सुखमय जिंदगी,
जो भी हों फिर साथ उनके, अवगुणों से आंखें मींचो।

दूसरों के नियम से, चलना भी कोई स्वतंत्रता है,
सच्ची स्वतंत्रता है कि खुद से, मर्यादा की एक रेखा खींचो।

जीवन तो नाजुक संतुलन है, ओर की ना छोर की,
न तो पूरे शिथिल होना, ना क्रोध में मुठ्ठियाँ भींचो।

तन को धोवे क्या मिले, जब मन में “हर्ष” हो या विषाद,
गंदले मन के जल को पहले, दोनों हाथों से उलींचो।



माँ की याद



राहुल कुमार

(आकड़ा प्रविष्टी संचालक) डी.ई.ओ.

अनुभाग: स्पेशल सेल

“नम आँखों से तूने लिया विदाई, कैसे भुला पाऊँ माँ मै तेरी जुदाई,
तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।”

“कितने ख्वाब सजाए थे तुमने मेरे स्वागत की तैयारी में,
सारे दर्द छू-मंतर से हो गए थे, मेरी पहली किलकारी में।
गिरते-संभलते कब पैरों पर खड़ा हुआ, तेरे ममता के छाव में,
जैसे छोटी नदियाँ जाकर मिले, सागर के बहाव में।
तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।।।”

“विद्यालय की वो तीसरी घंटी, जिसे छोड़ बनती दोस्तों की मंडली,
हाथों में छड़ी चेहरे पर नकली गुस्सा लिए, तू निकल पड़ती बनाने मेरी जीवन की कुंडली”
जब शाम ढले मन ना हो पढ़ना, या फिर सुबह देर से हो जगना,
शुरू हो जाती मेरा बुखार का चढ़ना, जब हो तुम्हारी मार से बचना।।
तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।।।”

“इतना भी ना था जरूरी तुझसे, मेरे लिए वों बारहवीं की परीक्षा,
 शायद कभी तू की होती मुझसे, अपनी कैंसर की समीक्षा।
 याद मुझे है उस दिन की शीत-लहर, मनहूस घड़ी की वों तीसरी पहर,
 बर्फ सी पड़ गई थी तुम्हारी बदन, चलने लगी थी ठंडी साँसों की लहर।।
 “नम आँखों से तूने लिया विदाई, कैसे भुला पाऊं माँ मैं तेरी जुदाई,
 तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
 याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।।”

“जब किताबों में झाँकते हुए आँखे मेरी दुख जाती है,
 जब कभी भूखे पेट ही, आँखे मेरी बंद हो जाती है।
 जब कभी दिल में दर्द की टीस सी उठती है,
 आँखों में बर्बस आंसुओं की बाढ़ आ जाती है।।
 तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
 याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।”

“पर ना जाने क्यों आज अपना ही घर मुझे अंजान सा लगे,
 तेरे जाने के बाद ये घर-घर सा नहीं, खाली मकान सा लगे।
 नम आँखों से तूने लिया विदाई, कैसे भुला पाऊं माँ मैं तेरी जुदाई,
 तन्हाई में तेरी वों बातें, आकर मुझे रूलाती है,
 याद मुझे तू आती है माँ, याद मुझे तू आती है।।”



कोरोना काल में आयुर्वेद की भूमिका



उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखाकार

विश्व की सभी संस्कृतियों में हमारे देश की संस्कृति सिर्फ प्राचीन ही नहीं है बल्कि सर्वश्रेष्ठ भी है। इसका मूल कारण है वेद, जिसके आधार पर संसार का सबसे प्राचीन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संबंधी शास्त्र आयुर्वेद, जो कि अथर्ववेद का उपवेद के रूप में जानी जाती है, मानव जाति के लिए सबसे प्राचीन ग्रंथ मानी जाती रही है।

ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेद का ज्ञान सर्वप्रथम हमारे सृष्टि के रचियता ब्रह्मा जी से प्रजापति ने उनसे अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त किया। उसके पश्चात प्रजापति से अश्विनी कुमारों ने, इनसे इन्द्र और इन्द्र से भारद्वाज ऋषि ने अध्ययन कर अन्य ऋषियों को इसका ज्ञान प्रदान किया। जिसमें मुख्यतः पुनर्वसु आत्रेय, अग्निवेश, धन्वन्तरि एवं वाग्भट आदि के नाम उल्लेखनीय है।

कोरोना काल में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा समय-समय पर संबंधित वायरस के संबंध में दिये गये अनुदेशों एवं वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए, अब प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठने लगा है कि अपने आप को स्वस्थ, सुदृढ बनाये रखने के लिए क्या उपाय किया जाय। और इसके प्रतिउत्तर में सर्वप्रथम मन में यह विचार आता है कि अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत किया जाये। इसके लिए लोगों द्वारा अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने हेतु अनेकों उपाय किये जा रहे हैं। जिसमें अनेकों प्रकार के उपाय, दवाओं आदि का प्रयोग लोगों द्वारा किया जा रहा है। अनेक प्रकार के विज्ञापन, समाचार पत्रों एवं दूरसंचार के माध्यम से लोगों को इसकी जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। लेकिन इससे इत्तर हमारे देश में इस विषम परिस्थिति में इस महामारी से बचने के उपाय के रूप में आयुर्वेद ही मुख्य रूप से विकल्प के रूप में है। मानवीय जीवन में सात सुख बनाये गये हैं जिसमें पहला सुख निरोगी काया यानी स्वस्थ शरीर का होना कहा गया है।

आयुर्वेद में भी वर्णित है- धर्मार्थ काममोक्षणामारोग्यं मूलमुत्तमम् अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल आधार स्वास्थ्य ही है अर्थात् स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी व्यक्ति के रोग को दूर करना। साथ ही इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य धन कमाने के लिए नहीं बनाया गया है अपितु प्राणी मात्र के प्रति दया व करुणा की भावना रखना। वास्तव में आयुर्वेद, श्रेष्ठ व स्वस्थ जीवन शैली का नाम है अर्थात् मनुष्य के जीवन को स्वस्थ एवं सुखी बनाने वाले विज्ञान का नाम ही आयुर्वेद है।

अर्थात् आयुर्वेद सिर्फ चिकित्सा विज्ञान औषधियों या जड़ी बूटियों की जानकारी देने वाला शास्त्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन का शास्त्र तथा जीवनदर्शन भी है जो वात, पित्त एवं कफ दोषों के आधार पर उचित और सही मार्गदर्शन कराता है। इसमें हरे पौधे, पत्ते, बीज, फल आदि को औषधि माना गया है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो औषधि नहीं है। भिन्न-भिन्न प्रयोजन के अनुसार प्रयोग करने पर प्रत्येक पदार्थ औषधि का काम करता है और प्रत्येक खनिज पदार्थ का शोधन करके औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, जो जीवन रक्षक सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही साथ यह भी जानकारी देता है कि आहार-विहार, जल-वायु आदि का विधिपूर्वक यदि अपने जीवन में सेवन किया जाये तो यह प्राणदायक सिद्ध हो सकता है।

आज व्यक्ति प्रकृति एवं अपनी चेतना से विमुख होता जा रहा है, जिसके कारण स्वास्थ्य से भी वंचित हो गया है। हमारे ऋषियों मुनियों द्वारा प्रदत्त इस अद्भुत शास्त्र के मार्गदर्शन और दिये गये ज्ञान का पालन करने से यह मानवीय जीवन के लिए लाभदायक सिद्ध होगा इसमें तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए। आज के समय में जब की कोरोना नामक महामारी से पूरा विश्व ग्रसित है, इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है और इसे हमें अपने जीवन में आत्मशात करने की आवश्यकता है, ताकि इस विषम परिस्थिति में अपने एवं अपने परिवार के साथ-साथ समाज एवं देश को इस महामारी से बचाया जा सके।



तिरंगा हमारी शान है



कैलाश मोदी

पिता: श्री धनंजय प्रसाद बरनवाल

तिरंगा हमारी शान है, यह हमारी आन है,
श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
तिरंगा हमारी शान है।

भारवासियों का है प्यारा यह तीन रंग का झंडा,
कर्म चक्र मध्यस्थ बगल में शौर्य प्रतीक है डंडा,
मंगल पांडे का मांग है, शहीदों का रक्तदान है,
श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
तिरंगा हमारी शान है।

भीखा कामा का सपना है, वीर सुभाष की है ललकार,
टीपू का ओज चमकता इसमें, कुंवर सिंह की है तलवार,
रानी झाँसी का आह्वान है, मुगल जाफ़र की शान है,
श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
तिरंगा हमारी शान है।

बिरसा, भैरव, मंगल, नाना, भगत सिंह, खुदीराम, आज़ाद,
हमें गर्व इन वीरों पर है, सम्पूर्ण जगत करता है याद,
बुद्धा भगत की ठान है, बापू का बलिदान है,
श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
तिरंगा हमारी शान है।

अंग्रेज़ी कुचक्र में फंस कर हम हिन्दू, मुस्लिम, आदिवासी
 भग्न हृदय सारे निरुपाय थे, अहिंसक अखंड भारतवासी,
 इतिहास देता प्रमाण है, यह ध्वज करता भान है,
 श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारती की पहचान है,
 तिरंगा हमारी शान है।

अंग्रेज़ी शक्ति काँप गयी देख हमारी ताकत को,
 जाते-जाते भी बाँट गए वो अखंड वीरांगना भारत को,
 उन्हीं की देन पाकिस्तान है, हमारी कमजोरी का निशान है,
 श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
 तिरंगा हमारी शान है।

हृदय हमारा बाँट गए वे रेखाओं से हमको पाट गए,
 मानवता का सौदा हो जहां, देकर ऐसे कई हाट गए,
 शत्रुता का अंत निदान है, एकता और प्रेम महान है,
 श्रद्धा सुमन, अर्पण है तन मन, यह भारत की पहचान है,
 तिरंगा हमारी शान है।



उलझान



स्व० जगदीश प्रसाद सिन्हा

पिता- प्रवीण कुमार सिन्हा
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी

काँप रहा थर-थर कर मेरा
कैसे सिंदुर दान करूँ ?
छोड़ा है निर्दयी नियति क्या
जो इनपर कुर्बान करूँ!!

जागेगा सौभाग्य किसी का
रूठेगी तकदीर कहीं!
हुलस पड़ेंगे प्राण किसी-के
बरस पड़ेंगे नीर कहीं!!
कहीं मिलन की मृदुल भावना
कहीं विरह की ज्वाला हैं।
ओठों पे मुस्कान कहीं तो
कहीं जहर का प्याला है।।

नाचेंगे अरमान कहीं
कहीं रोएगी आशा बेचार
बिछुड़ जायेगा- दृश्य कहीं
कहीं भरेगा ऊर में प्यार !!
कहीं-बजेगी जीवन वीणा
कहीं होगी मुस्किल जीना
छायेंगे अभिराम कहीं

कहीं होगा हाला पीना
कहीं मचा कुहराम हिया में
कहीं पायल की झंकार-प्रिये
दिल दुनिया-बर्बाद कहीं तो
कहीं बसा-ससांर प्रिये
एक पुष्प हे दो देवों का
कैसे मैं ख्याल करूँ ?
बलि जाऊँ क्या किसको पूझू ?
किसका मैं अपमान करूँ ?

एक देव साक्षात मिला तो
एक देव निराकार हुआ
हृदय सिंहासन एक को दूँ तो
दूजे का तिरस्कार हुआ
कठिन परीक्षा, विकट समस्या
हृदय में बून्द विचार मचा
रे निर्दयी भगवान बता
तू क्यों ऐसा संसार रचा।



कोरोना से जंग



श्री हेनरी रोजारियो
सेवानिवृत्त व.ले.अ.

कोविड 19 से सभी परिचित हैं। साल 2019 में चीन देश में कोरोना वाइरस के कारण इस महामारी का आरंभ हुआ जो धीरे-धीरे पूरे विश्व के सभी देशों में फैल गया। इस बीमारी में शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है एवं खाँसी की शिकायत होती है। तुरंत ईलाज नहीं होने पर फेफड़ा में इसका असर होता है और आदमी को सांस लेने में कठिनाई होती है एवं सही देखभाल एवं इलाज नहीं होने पर उसकी मृत्यु भी हो जाती है। सरकार द्वारा इसके रोकथाम के लिए कई उपाय बताये गए हैं, औषधी एवं टीकाकरण की व्यवस्था की गई है जिससे इस बीमारी से लड़ा जा सकता है एवं शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाकर इस बीमारी से बचा जा सकता है।

यदि हम मनुष्य के शरीर पर ध्यान देंगे तो हम पाएंगे कि ईश्वर ने मनुष्य को अपना प्रतिरूप बनाया है एवं उसे प्रज्ञा, बुद्धि एवं ज्ञान से भर दिया है। यही कारण है कि जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य ने उन्नति की है एवं उसके पास हर सुख-साधन मौजूद है फिर भी आज मनुष्य खुश नहीं है एवं कई बीमारियों से जकड़ा है, डिप्रेशन में रहता है एवं आत्महत्या करने की घटना अक्सर सुनने को मिलती है। विज्ञान की प्रगति जिस तरह चरम सीमा पर पहुँची है उसी तरह कई बीमारियों का भी उद्गम इस संसार में हुआ है। वर्तमान समय में कोरोना एवं ब्लैक फंगस प्रचलित है। इसका क्या कारण है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। कुछ कारण निम्नलिखित हैं:-

1. आधुनिक मनुष्य मोबाईल एवं इन्टरनेट में ज्यादा व्यस्त रहने लगा है मोबाईल एवं इन्टरनेट दैनिक जीवन में एक जरूरी साधन है जो हर दृष्टि से हमारे लिए उपयोगी है। आज लॉक-डाउन के समय में बच्चों की पढ़ाई, कार्यालय के कार्य एवं बहुत सारे कार्यक्रम इन्टरनेट द्वारा की जा रही है। लेकिन बहुधा मोबाइल एवं इन्टरनेट का दुरुपयोग भी किया जाता है, मोबाईल द्वारा अश्लील विडियो बनाकर एवं दूसरे को भेजकर ब्लैकमेल किया जाता है। साइबर क्राइम द्वारा दूसरों को क्षति पहुँचायी जा रही है एवं बहुत ज्यादा समय मोबाईल एवं इन्टरनेट की प्राथमिकता देने के कारण दूसरे कार्यों को नजरअंदाज किया जा रहा है।

- इस तरह मनुष्य का जीवन सीमित हो गया है। जिसका असर उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है।
2. मनुष्य शराब, सिगरेट, बीड़ी गांजा, तम्बाकू, गुटका एवं विभिन्न मादक एवं नशीली पदार्थों का सेवन करने लगा है। बहुत सारे लोग इसके गुलाम हो गये हैं। जिसका बुरा असर उनके जीवन एवं स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।
 3. मनुष्य का जीवन व्याभिचार की ओर चला गया है। आज समाज में रिलेशनसीप देखने को मिल रहा है। बिना शादी किए एक पुरुष एवं महिला एक साथ पति पत्नी की तरह जीवन बीता रहे हैं। एक दूसरे के साथ अनैतिक संबंध स्थापित करना एवं व्याभिचार की प्रवृत्ति मनुष्य को पतन की ओर ले जा रही है।
 4. मनुष्य के जीवन में बदले की भावना घर कर गयी है। लोग एक दूसरे को क्षमा नहीं कर पा रहे हैं। खून का बदला खून का बोलबाला है। बहुत सारे मुकदमें कोर्ट में विचार धीन हैं, जिसका फैसला होने में वर्षों निकल जाते हैं, जिसका असर मनुष्य के जीवन में पड़ता है।
 5. सामाज में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लोग कम समय में एवं थोड़ी मेहनत करके ज्यादा धन कमाना चाहते हैं। लोगों को ठगना एवं उसकी मजबूरी का फायदा उठाना आम बात है। इस तरह के व्यवहार करने से मनुष्य के मन में अशांति फैल गयी है, जिसका दुष्प्रभाव उसके जीवन में दिखाई देता है।
 6. जैसे-जैसे विज्ञान ने तरक्की की है, वैसे-वैसे बहुत सारे लोग ईश्वर से विमुख हो गये हैं, उनके जीवन में ईश्वर के प्रति न कोई आस्था है और न विश्वास है, फलतः वे मनमौजी का जीवन जी रहे हैं। यही कारण है कि आज राष्ट्र-राष्ट्र में युद्ध छिड़ गया है। एक दूसरे को मदद करना दूर की बात है। उनके जीवन में मनुष्य का कोई महत्व नहीं है। राष्ट्र अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने में लगा हुआ है। एक देश दूसरे देश के पीछे लगा हुआ है, जिसके कारण युद्ध में विराम नहीं हो सका है एवं आतंकवाद एक दूसरे की क्षति पहुँचा रहे हैं। उपरोक्त कारणों से समाज में कई बीमारियाँ फैल गयी है जो मनुष्य के जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया है एवं बहुत सारे लोग असमय मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं।

इस संसार में मनुष्य का जीवन अनमोल है। ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि इसलिए की है कि वह अपने ईश्वर को अपने सारे हृदय से अपनी सारी बुद्धि से एवं अपनी सारी शक्ति से प्यार करें तथा एक दूसरे को भी अपने समान प्यार करें। प्रेम में ही मनुष्य का जीवन आधारित है। प्रभु सच्ची दाखलता है और हम उसकी डालियाँ हैं। जो डाली दाखलता से जुड़ी रहती है वह हरी भरी रहती है और जो डाली दाखलता से अलग हो जाती है वह सूख जाती है। लोग उसे उठाकर फेंक देते हैं अथवा आग में जला देते हैं। ईश्वर से अलग रहकर मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। यदि हम ईश्वर में निवास करते हैं और ईश्वर हम में निवास करता है तो हम जो भी ईश्वर से माँगे वही ईश्वर हमें प्रदान करेगा और हमारे शरीर में ईश्वरीय शक्ति बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में कोई भी वाइरस या बीमारी हम पर हावी नहीं होने पाएगी और हमें अलग से शरीर में इम्यूनिति बढ़ाने की आवश्यकता नहीं होगी एवं कोरोना अथवा किसी भी बीमारी के जंग से निश्चित रूप से हम विजयी होंगे।



ऐसा भी होता है



जीतवाहन गुप्ता
लिपिक

हवा शुद्ध है, मगर मास्क लगाना जरूरी है
 रोड खाली है, मगर घूमना मना है
 हाथ साफ है, लेकिन हाथ मिलाना मना है
 मित्रों के पास साथ बैठने के लिए समय है, मगर जाना मना है
 पैसा है बहुत, मगर होटल बंद है
 काम बहुत है, मगर मजदूर नहीं मिल रहे हैं
 मन बहुत कर रहा कि लॉन्ग ड्राइव पर जाए, मगर परिवार को ले जाना मना है
 दुश्मन जगह-जगह है, मगर उसे पहचान नहीं सकते
 जिसको ट्रेन में सफर करना मुश्किल था, मगर अभी हवाई जहाज से सफर कर रहा है।



मेरी माँ



डॉ. शिप्रा शालिनी आईद

सबसे प्यारी, सबसे न्यारी, माँ होती है हमारी
अगर जिंदगी धूप है तो माँ एक गहरी छाँव है ।
इस धरा पर कब कहाँ तेरे जैसा स्वरूप है
अगर कुछ सच्चा है तो इस जहाँ में तेरा रूप है ॥

लेकिन जिस दिन से आप अनन्त विश्राम में हो गई विलीन।
हम भी आपकी यादों में हो गए गमगीन।
याद आपकी हमेशा आती, बिन आँसू के हरदम रुलाती
कहते हैं किसी के जाने से, जिंदगी थम नहीं जाती ॥

लेकिन कटु सत्य है जीवन में पुनः माँ नहीं मिल पाती
भरे घर में तेरी आहट नहीं मिलती माँ ।
तेरी हाथों की थपकी भरी नर्माहट याद आती माँ
मुझे ऊँचाईयों पर सारी दुनिया देखती है माँ
पर तरक्की देखने को तेरी आँखें नहीं बस अब माँ ॥

हम एक शब्द है तो तू पूरी भाषा है माँ
हम एक इच्छा हैं तो आप एक दुआ हैं माँ ।
बस तेरी यही एक परिभाषा है माँ
हम हताश थे तो हिम्मत और विश्वास थी तुम माँ ॥

संवेदना है, भावना है, अहसास है माँ
जीवन में फूलों का अहसास है माँ ।

यादों की इस शीला में, इस संदर्भ में कृतार्थपूर्ण कहना है
यथार्थ में जी कर जीवन सार्थक बनाना है।

सीनियर सीटिजन्स



विजय किशोर प्रसाद
सेवानिवृत्त निजी सचिव

प्रायः संसार के सभी देशों की आबादी में आश्चर्यजनक बदलाव आ रहे हैं। बुजुर्गों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है और हमारे तीव्रतम विकास का परिणाम है जिसका अर्थ है कि अन्य आयु वर्गों की अपेक्षा सीनियर लोगों की संख्या में अपार बढ़ोतरी हो रही है। अब तक तो यह समझा जा रहा था कि बढ़ती हुई पीढ़ी सिर्फ विकसित देशों की ही समस्या है मगर अब विकासशील देशों में भी बुजुर्गों की जनसंख्या खतरे के निशान को पार करती जा रही है। उत्पादन करने वालों की अपेक्षा उत्पादन न करने वालों की संख्या में यह बेतहाश बढ़ोतरी आर्थिक समस्याएं तो पैदा कर ही रही है इसके साथ सामाजिक, मानवीय और सांस्कृतिक समस्याएं भी बढ़ रही हैं। यह एक ज्वलंत प्रश्न है कि इस बढ़ती हुई विशाल बूढ़ी फौज की समाज कैसे देखभाल करेगा और इन्हें कौन सहारा देगा ?

भोजन और आश्रय के अतिरिक्त इन बूढ़ों को दवा, देखभाल, अपनापन और रिश्तों की गरमाहट चाहिए। उन्हें छोटे बच्चों सा भरपूर प्यार और पूरा ध्यान चाहिए ये बूढ़े बात-बात पर रूठते हैं, जिद करते हैं, भूल जाते हैं गुस्सा करते हैं, डाँटते हैं, अपने जीवन के अनुभव कहते हैं तथा एक ही बात को कई बार दोहराते हैं। वे गूंगे होकर तो बैठेंगे नहीं, कुछ न कुछ बातचीत करेंगे, अपना पक्ष रखेंगे और सबके सामने आना चाहेंगे। उन्हें खुलकर जीने के लिए अपना निजी स्पेस भी चाहिए।

इन बुजुर्गों के भी कई प्रकार हैं। वृद्ध दम्पतियों की अपेक्षा अकेली विधवा महिलाओं, विधुर व तलाकशुदा लोगों की समस्याएं कुछ अलग प्रकार की होती हैं। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में बहुतायत में बूढ़े लोग रहते हैं। अब वहाँ भी संयुक्त परिवार का ढाँचा चरमरा गया है। गाँव से शहर की ओर पलायन की दर बहुत तेज हो गई है, जिससे शहर और गाँव दोनों जगह वृद्धों की समस्याएं बढ़ गई हैं। अगर बच्चे शहर जाते हैं और वृद्धों को पीछे छोड़ जाते हैं तो समस्याएं कुछ और बढ़ जाती हैं और अगर वे वृद्धों को साथ ले जाते हैं तब समस्याएँ कुछ और हो जाती हैं। हमारे रीति-रिवाजों के अनुसार बूढ़े लोग अपने बेटे के साथ रहना पसन्द करते हैं। बेटियों को तो पराया धन कहा जाता है और तभी बेटों

को बुढ़ापे का बीमा कहा जाता है। एक सर्वे के अनुसार अपने बेटे के साथ रह रहे 25 प्रतिशत बूढ़े और 57 प्रतिशत बूढ़ी औरतें खुश नहीं हैं। उनकी दवा का ठीक से इन्तजाम नहीं किया जाता। उनकी रूचि या पसंद का ध्यान नहीं रखा जाता। उनकी आयु या शरीर की अवस्था के अनुकूल भोजन नहीं बनाया जाता। अगर वे कुछ शिकायत करते भी हैं तो घर में बेवजह टेंशन बढ़ती है और उनकी आपत्ति करने से कुछ फर्क भी नहीं पड़ता। अतः वे सारा आक्रोश व अपमान चुपचाप पी जाते हैं। जिन बूढ़ों के पास आय के साधन हैं उनकी बजाय वे बूढ़े बुरी तरह त्रस्त हैं जो पूरी तरह अपने बेटों पर आश्रित होते हैं।

आज सीनियर सीटिजन्स की खुद से और जमाने से अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई हैं। अब अंधेड़ लोग अपने पोते-पोतियों को स्कूल छोड़ने, बिल जमा करवाने व घर के फालतू काम करने जैसे कामों से बोर हो चुके हैं। वे धार्मिक प्रवचन सुन-सुनकर उकता चुके हैं, धार्मिक यात्राएं कर-करके वही स्थान बार-बार देखकर उब चुके हैं। वे चाहते हैं कि समाज उन्हें बूढ़ा और बेकार का माल समझकर खारिज न करे। वे बहुत कुछ कर सकते हैं और करना चाहते हैं और करते भी हैं। उन्हें इस बदले हुए समय और माहौल में अपने लिए उपयुक्त सृजनात्मक भूमिका की दरकार है।

सीनियर सीटीजन में आने वाले बदलाव युवावस्था में आने वाले बदलावों की अपेक्षा बहुत असहनीय, अजीब व भद्दे होते हैं। उम्र के इस मोड़ पर शरीर नामक मशीन पुरानी हो जाती है। मांसपेशियां, अंग व उत्तक शिथिल पड़ने लगते हैं। हड्डियों के घनत्व में कमी आ जाती है। शरीर की बनावट के सारे अनुपात गड़बड़ा जाते हैं। शरीर की ऊँचाई औसतन तीन ईंच कम हो जाती है। आदमियों की कमर ढलक जाती है। अपनी पतलून बाँधने के लिए बेल्ट को बार-बार कसना पड़ता है। बूढ़ी होती स्त्री शीशे में खुद को पहचान नहीं पाती और खिझती है। आदमी और ज्यादा भयभीत हो जाता है जब वह अपने सामने खुद को असहाय व अशक्त होता देखता है।

हमलोग भारतवर्ष में बचपन में सुना करते थे कि इंग्लैण्ड, फ्रांस व अन्य पश्चिमी देशों में बूढ़े लोग घर से तंग होकर ओल्ड एज होम्म में जाकर उदासी और निराशा भरा जीवन बिताते हैं। तब ये बातें सुनकर हमलोगों को हैरानी होती थी कि कोई अपने माँ-बाप को वृद्ध आश्रय में क्यों रखना चाहेगा और वह भी एक खाता पीता समृद्ध परिवार। निहायत गरीब आदमी तो चलो साधनों की कमी के कारण ऐसा कर भी दे मगर अमीर आदमी के पास तो अपना घर-बार है, सारी उम्र की संचित आय है, नौकर चाकर है, उसे वंचितों सा जीवन बिताने की क्या आवश्यकता आ पड़ी। हमने अन्य सभी बातों में पश्चिमी सभ्यता की अंधाधुंध नकल कर ली तो इस मामले में हम पीछे कैसे रह सकते थे। बढ़ती आबादी, मंहगाई और महत्वाकांक्षी युवा वर्ग ने पुरानी पीढ़ी को हासिये के बाहर धकेल दिया है। हेल्प-एज नामक संस्था के अनुसार भारत में सीनियर नागरिकों की आबादी सात करोड़ से अधिक है और 2026 तक यह आबादी बढ़कर लगभग 13 करोड़ का आंकड़ा पार कर जाएगी। 60 साल की उम्र पार करने वाले भारत में तकरीबन 8 करोड़ लोग हैं जिनमें तीन करोड़ के लगभग 70 साल से अधिक है। 92 लाख लोग 80 साल से ऊपर है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है इन्सान की दूसरों पर निर्भरता बढ़ती जाती है। हमें बताया जाता है कि शहरी क्षेत्रों में 65 प्रतिशत बुजुर्ग महिलाएँ और 47 प्रतिशत बुजुर्ग आदमी भोजन, कपड़ा, आवास और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पूरी तरह दूसरों पर निर्भर है अर्थात् खुद को सहारा देने का कोई जरिया नहीं है उनके पास।

सबसे चौंका देने वाली बात यह है कि कुल मिलाकर लगभग दस प्रतिशत बुजुर्ग ऐसे हैं जिन्हें सम्भालने वाला कोई नहीं है यानि सत्तर लाख वृद्ध दूसरों की दया के सहारे जिन्दा रहते हैं। अगर घरवालों ने उनकी देखभाल कर ली, उन्हें रोटी, कपड़ा व

मकान उपलब्ध करवा दिया तो ठीक है वर्ना वे बेसहारा लोग सड़क पर आ जाते हैं। ये सात करोड़ सहारा खोजते बुजुर्ग कोई कम आबादी नहीं हैं। बुजुर्गों की देखभाल करना तो बच्चों की केयर करने से भी ज्यादा मुश्किल काम है। बच्चे तो जैसे-जैसे बढ़ते हैं, वे अपने पैरों पर खड़े होते जाते हैं मगर बुजुर्ग समय के साथ-साथ और भी अधिक ध्यान मांगते हैं। ऐसे बूढ़े लोग जो बीमार हैं और जिन्हें देखभाल की सख्त जरूरत है वे दो करोड़ 72 लाख से अधिक हैं। यानि तीन करोड़ लोगों की देखभाल का जिम्मा उन लोगों पर है जो उनकी परवाह नहीं करते।

सूरते-हाल यह है कि वृद्ध बढ़ते रहे जा हैं और उन्हें सम्भालने वाले युवा कम होते जा रहे हैं। जो है भी अच्छी व मोटी कमाई वाली नौकरियों के पीछे महानगरों या विदेशों में जाने की लालसा में बिस्तर बांधकर तैयार बैठे हैं जिससे समाज में असंतोष दुःख और संताप में अप्रत्याशित वृद्धि होती है। साथ ही सरकारी ससांधनों पर भी बोझ बढ़ता है। आज हर राज्य सरकार को अपनी बूढ़ी आबादी के लिए पेंशन और सस्ती स्वास्थ्य योजनाएं शुरू करनी पड़ रही है। कारण साफ है आज की राजनीति में इस बूढ़ी अशक्त और आर्थिक रूप से कमजोर होती जा रही जमात की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अब शहरों में गरीब बुजुर्गों के रहने का कोई स्थान नहीं है। जो रह रहे हैं वे दबे-घुटे, उपेक्षित और दुखी हैं। इन्हें अपनों द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर छोटे स्थानों पर अकेले रहने पर मजबूर होना पड़ता है। गांवों व छोटे कस्बों में सिविल सुविधाएं और अन्य आधारभूत सहूलियतें इतनी पिछड़ी और बदहाल स्थिति में हैं कि सामान्य बुखार तक के लिए समुचित उपचार नहीं मिल पाता। असाध्य या बड़े रोगों के इलाज की बात तो जाने ही दीजिए। बुढ़ापे में शरीर थकने के कारण दिल से संबंधित रोग, मधुमेह, रक्तचाप या जोड़ों में दर्द जैसी आम समस्याएं तो होती हैं लेकिन इन सबसे बड़ी समस्या है भावनात्मक असुरक्षा। इसके कारण बुजुर्गों में बेचैनी, तनाव, चिड़चिड़ापन और उदासी घिर जाती है। अमीर घरों में नौकर रख दिया जाता है या उन्हें किसी ओल्ड एज होम में टिका दिया जाता है जिसके कारण बुजुर्ग को खुशी या संतोष नहीं मिलता जितना की अपने ही परिवार में रहकर मिलता है। “मातृ देवो भव और पितृ देवो भव” की संस्कृति वाले देश में पश्चिमी समाज की तरह ओल्ड एज होम में रहने वाले नागरिकों में अकेलापन की भावना तेजी से बढ़ रही है।

अपने ही बच्चों से ये लोग लगातार जिल्लत, अपमान और दुर्व्यवहार से तंग आकर कोई विकल्प ढूंढ लेते हैं। जो अपने ही घर में रहकर उपेक्षा और बदहाली झेल रहे हैं, वे अपना दुःख किससे कह सकते हैं। अगर मियां बीबी दोनों साथ है फिर तो उनकी थोड़ी अच्छी कटती है मगर अकेले बुजुर्ग की हालत बहुत ही खराब होती जा रही है। चाहे बच्चे अपने बुजुर्गों से दरकिनार हो जाएं या चाहे तंग आकर बड़े-बूढ़े अपने बच्चों या पोते-पोतियों से अलग होकर किसी ओल्ड एज होम या सस्ती जगह चले जाएं, उस बात का तो यकीन है कि यह बुजुर्गों का दिल ही है जो तार-तार होता है, उन्हें ही जुदाई के सबसे अधिक दंश सहने पड़ते हैं। वे गुम हो गए हैं; खो गए हैं उनकी पहचान नहीं रही। वे लापता हो गए हैं।

आम तौर पर लापता वे होते हैं जो भीड़-भाड़, भगदड़, मेले, बाढ़ या भूकम्प के शिकार होते हैं। लापता वे भी होते हैं जिनके परिजन आतंकवाद का शिकार हो जाते हैं, और भी कुछ लोग गुम हो जाते हैं; लापता हो जाते हैं। ये वे लोग हैं जो ओल्ड एज होम में रहते हैं असलियत में लापता लोगों की खबर अखबार या टेलीविजन पर नहीं आते। लापता वे लोग होते हैं जिनको अपना कहने वाला इस दुनिया में कोई नहीं होता।



देर हो सकती है पर

देर हो सकती है पर अंधेर नहीं हो सकता,
 भेड़िया जीव हिंसक है वह शेर नहीं हो सकता।
 माना कि कोरोना की बनी नहीं अभी दवा,
 भागेगा जरूर एक दिन, दिलेर नहीं हो सकता।
 कोरोना क्रूर घातक है, नाशक है जिंदगी का,
 संयम से रहना सीखो, उलटफेर नहीं हो सकता।
 मिलिए सब से दिल से, पर रहकर दूर दूर,
 सही राह मिलने में, अबेर नहीं हो सकता।
 काल कराल खूंखार बहुत है, बचा न राजा रंक,
 रावण सदा रावण ही रहेगा, कुबेर नहीं हो सकता।
 तबलीगी जमातियों ने विदेशों से आकर यहाँ,
 फैलाया संक्रमण घर-घर, समय का फेर नहीं हो सकता।
 गले मिलना, थूकना, खांसना, छींकना और हाथ मिलाना,
 इन सब में रखिये संयम, कोई फेर नहीं हो सकता।
 कोरोना हराने का मोदी जी ने ध्वनि यग का दिया उपाय,
 शंख, थाली, ताली बजाओ, गुंजन जैसा टेर नहीं हो सकता।
 मंदिर, मस्जिद, मॉल, विद्यालय बंद रखना हुआ जरूरी,
 बंद करने का लाभ यह है, असंयमों का ढेर नहीं हो सकता।
 शान्ति की मीठी झील है भारत, अशांति का विष मत घोलो,
 शाद औश्र ताहि का मरकज़, शरीफे अजमेर नहीं हो सकता।
 सदियों से सभी कौमो के लोग मिल-जुल कर रहते हैं यहाँ,
 वसुधैव कुटुम्बकम के नारे में हेर-फेर नहीं हो सकता।



कैलाश मोदी

पिता: श्री धनंजय प्रसाद बरनवाल

रफ़ता रफ़ता जिंदगी



सुभाष चन्द्र गुप्ता
स. ले. अ.

रफ़ता रफ़ता जिंदगी जाया होती है
पर हम कभी कभी रुके से लगते हैं
जब मुझे कोई पुकारता है पीछे से
देखता हूँ उन गुजरे रास्तों को
उबड़ खाबड़ पथरीली पगडंडी था
घायल करता रहा था मुझको
पर मंजिल पाने की चाहत ने
भुला दिया दर्द को
अब सपाट रास्ते पे हम थे
और मेरे अरमान उड़ान भर रहे थे
अपनों के साथ, जो मेरा परिवार था।
अभी हद नहीं है, सफ़र का दौड़ बाकी है
पर कुछ एक ठोकर रास्ता रोकती है
ये उसकी फितरत है और मेरी किस्मत
पर जीवन तो नदी की धार है
क्यों कर कोई रोक पाया है इसे भला

ये ठोकर भी पार हो जाएगी
रुकना मेरी आदत नहीं
गफलत उन पत्थरों की है जो
दिवा स्वप्न देखते हैं कि
वह सर्व शक्तिमान है
अभिमान है उन्हें कि मेरे से मुकद्दर है
पर बनाने वाले ने सबका भाग्य बनाया है
न वो कुछ है, न मैं कुछ हूँ
बस ऊपर वाले की बंदगी है
तेरा कर्म ही तेरा सफ़र है
जैसा करेगा वैसा भरेगा
यही सच है यही सच है।
यह मेरी भौतिक रचना है।
यह अप्रकाशित है।



एक गृहिणी की दिनचर्या

आलोक कुमार
स.ले.प.अ. (ऑडिट)

1. भोर होने वाली है, पर
अन्धकार अभी भी साम्राज्ञी है,
ऐसे जैसे नयी बहु को मिल गई हो घर की चाबी,
पर सास ने दी नहीं, अभी तक पूरी तरह से आजादी,
2. ठीक इसी समय किसी घर में,
एक कमरे की बत्ती जल उठती है
और उसमें सो रही एक गृहिणी
हड़बड़ा कर उठ पड़ती है,
अरे! कितनी देर हो गई
3. अरे! कितनी देर हो गई
इतनी देर तक सोई रह गई मैं
आज तो थोड़ा जल्दी उठना था,
मुन्ने को सूबह की बस और
पति देव को जल्दी ट्रेन पकड़ना था
4. अब जल्दी-2 काम निबटाना है
बच्चों और पति देव के लिए टिफिन बनाना है
इसके बाद मुन्ने को जगाऊंगी,
किसी तरह से उसे तैयार कराऊंगी।
सूबह की स्कूल भी एक आफत है,
बच्चे को जल्दी उठाने में बड़ा कष्ट है,
थोड़ी देर बाद पति देव भी जाग जाएंगे,
उठते ही भागदौड़ मचाएंगे,
जल्दी-जल्दी में सारा सामान फैलायेंगे
अपने साथ मुझे भी भगायेंगे
और नाश्ता कर टिफिन लेकर चले जायेंगे।

5. अब मुन्ने को स्कूल की बस पकड़ना है,
जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाना है,
बस का ड्राइवर भी बहुत सताता है-
कभी 20 मिनट पहले तो कभी देर से आता है,
मैं खड़ी रहूँ तो ठीक, वरना
बिना मुन्ने को लिए ही चला जाता है।

6. घर में कितना काम पड़ा है,
झाड़ू पोंछा और बर्तन धरा है
कब से बिस्तर की चादर भी नहीं बदली
गन्दे लिफाफों और गिलाफों के बीच सांस है अटकी।
इन्हीं सब उधेड़बुनों में मशगूल
सुबह से ही आपाधापी में लगी है पगली
ना अपना ख्याल है, ना अपने लिए वक्त है,
दोपहर के तीन बजने को आए,
पर श्रीमती जी अभी तक काम में व्यस्त है



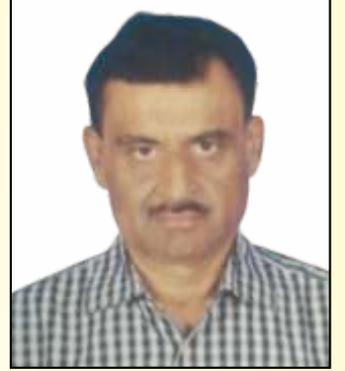
पीपल का पेड़

महान ग्रंथ गीता के पन्द्रहवे अध्याय में कहा गया है

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्चत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥

अर्थात् यह संसार उर्ध्वमूल वाला पीपल का पेड़ है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसके मूल हैं ब्रह्मा जिसकी शाखा और वेद जिसके पत्ते हैं।

पीपल के वृक्ष को कभी न क्षीण होने वाला अक्षय वृक्ष माना जाता है। प्राचीन काल से ही भारतीय जनमानस में इस वृक्ष के प्रति अगाध श्रद्धा है। इसे देवालयों, सार्वजनिक स्थलों पर लगाया जाता है और इसकी पूजा की जाती है। लोगों में ऐसा विश्वास है कि इसमें देवताओं का निवास है इसलिये इसे देव सदन भी कहा जाता है। इसके अन्य नाम हैं- चलपत्र, गजाशन, बोधितरू, वाहिक, बोधिद्रुम, क्षीरद्रुम, ज्ञानवृक्ष, ब्रह्मवृक्ष, सौरवृक्ष आदि। शायद अश्वत्थ के नाम पर ही द्रोणपुत्र का नाम अश्वत्थामा पड़ा था। प्रचीनकाल में आर्यजाति शत्रुओं के विनाश के लिये पीपल की आराधना किया करती थी। धार्मिक कार्यों में किसी न किसी रूप में इसका ही अवश्यक उपयोग होता है। तंत्र-मंत्र, शास्त्र, श्राद्ध आदि कार्यों में सर्वत्र पीपल की उपादेयता है। पदमपुराण के अनुसार पीपल को प्रणाम करने से और उसकी परिक्रमा करने से आयु बढ़ती है इसमें सभी तीर्थों का वास है इसकी आराधना से भी मनोरथ पूर्ण होने के साथ ही सभी अनिष्टों का शमन भी होता है।



हिरेन्द्र कुमार झा
सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक

भगवान बुद्ध को भी गया में इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। शायद इसके कारण गया को बोध गया और इस वृक्ष को 'बौधि वृक्ष' कहा जाता है। गया के इस 'बौधि वृक्ष' की एक शाखा को प्रियदर्शी अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा के द्वारा लंका भेजा था, जिसे अनुराधापुर में रोपा गया था।

इन्हीं गुणों के कारण योगेश्वर कृष्ण ने कहा है कि- "वृक्षों में मैं अश्वत्थ हूँ।" गीता का यह श्लोक द्रष्टव्य है:

"अश्वत्थ सर्ववृक्षानाम, देवर्षीनाम च नारदः।
गन्धर्वीणां चित्ररथः, सिद्धानां कपिलो मुनि॥"

इस वृक्ष के संबंध में अनेक भ्रातियाँ और अंधविश्वास व्याप्त हैं। प्रायः लोग कहते हैं कि इस पर ब्रम्हराक्षस एवं भूत-प्रेतों का वास रहता है, परन्तु यह सत्य प्रतीत नहीं होता, क्योंकि जहां देवताओं का वास हो वहाँ निकृष्ट कोटि की प्रेतात्माएँ कैसे रह सकती हैं?

पीपल विष्णु रूप माना जाता है और विष्णु सृष्टि के पालन कर्ता हैं, अतः भूक्षरण, भूस्खलन और भूमि कटाव को रोक कर यह धरती और उसके निवासियों की रक्षा करता है। इसके अतिरिक्त इस सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक धनवन्तरि भी विष्णु के ही अंश से उत्पन्न हुये थे, इसलिये इसमें चिकित्सीय गुणों का भी भरपूर समावेश है और आर्युर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में इसके अनेक उपयोग हैं। औषधीय गुणों के कारण ही इसे कल्पवृक्ष भी कहा जाता है और इसके छाल, पत्ते, फल, बीज, जटा ओर कोपलें सभी रोगों और आधि-व्याधि के शमन में काम आते हैं। पीपल का दातुन करने एवं रस चुसने से मलेरिया और अन्य प्रकार के ज्वर उतर जाते

हैं, खांसी और दमा में भी लाभदायक है एवम् इसके कोमल पत्तों के रस गर्म करके कान में डालने से कान की बिमारियों में आराम मिलता है तथा पत्तों के रस को शहद में मिला कर अंजन करने से नेत्र रोग ठीक होते हैं, साथ ही नेत्र की ज्योति भी बढ़ती है। हिन्दुओं के आदि पूज्य गणपति के प्रतिरूप हाथी का प्रिय भोजन भी पीपल है और महावतों के कथनानुसार अगर उन्हें प्रतिदिन पीपल की पत्तियां नहीं मिले तो वे उन्मत्त हो जाते हैं।

आज विश्व की सर्वाधिक गंभीर समस्या है- पर्यावरण प्रदूषण की समस्या कहा भी गया है कि “पर्यावरण संरक्षित तो जीवन संरक्षित।” पर्यावरण का संतुलन ही जीवन चक्र को नियंत्रित करता है। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की सुदृढ़ परंपरा रहीं हैं। हमारे वेद कालीन महर्षियों ने उद्घोष किया था- “ॐ धौ शांतिः अंतरिक्षः शांतिः, पृथ्वी शांतिः, आपः शांतिः”। वेद उपनिषद्, पुराण, रामायण तथा महाभारत सभी ग्रंथों में मनीषियों ने पर्यावरण की गौरव महिमा को स्वीकारा था। वैदिक वाङ्मय में ऐसे अनेक सूक्त, ऋचायें, उक्तियाँ और कथानक मिलते हैं, जिनमें प्रकृति के प्रति गहरा श्रद्धा भाव हैं। प्रकृति की सुंदरता, स्वच्छता और महत्ता को प्रदर्शित करने के लिये नदियों, समुद्रों, पर्वतों, वृक्षों और लताओं का पूजन होता था। पर्यावरण के महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिये अरण्यों में रहकर ऋषियों ने आरण्यक साहित्य का सृजन किया। अपने देश के अलावे अन्य स्थानों पर भी प्रकृति पूजा का प्रचलन था। अमेरिका महाद्वीप से लेकर बेबीलोन एवं मिस्र आदि प्राचीन सभ्यताओं में भी प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा भावना का वर्णन है। इस प्रदूषण के युग में तो पीपल का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि आज की मुख्य समस्या है वायु प्रदूषण कहावत है “जब तक सांस तब तक आस” और जब सांस ही जहरीली हो जाये तो जीवन की आशा करना ही व्यर्थ है।

औद्योगिक कारखानों, विभिन्न प्रकार के इंजनों और दूसरे प्रकार की निकलने वाली विषैली गैसों वायु प्रदूषण को बढ़ाती है। शहरी क्षेत्रों में तो कंक्रीट के भवनों एवं औद्योगिक गतिविधियों से वायु और भी अधिक शुष्क एवं प्रदूषित रहती हैं। सर्वाधिक ऑक्सीजन का सृजन और विषैली गैसों को आत्मसात करने की इसमें अकूत क्षमता है। तुलसी के अतिरिक्त सिर्फ पीपल ही दिन रात ऑक्सीजन प्रवाहित करता है। सर्वाधिक ऑक्सीजन निरस्त करने की क्षमता के कारण न केवल इसे प्राण वायु के भण्डार के नाम से जाना जाता है, वरन् इस प्रदूषण के युग में इसके महत्त्व को और भी बढ़ा देता है।

इसके अलावे इस वृक्ष का व्यवहारिक महत्त्व भी बहुत ज्यादा है। यह वृक्ष काफी बड़ा और घना होता है। अपनी शीतल छाया के कारण जहाँ यह वृक्ष इन ग्रामीण क्षेत्रों में झूला झुलने, आँख-मिचौली खेलने और मिलन-विरह के गीतों का माध्यम बनता है, वहीं शहर में भी इसके नीचे आवश्यकता की बहुत सारी चीजें मिल जाती हैं। फिल्मों में भी इस से संबंधित गीत काफी लोकप्रिय हैं। आज भी जब हम “गोदन” फिल्म का यह गाना-

“पीपरा के पतवा सरीख डोले मनवा कि जियरा में उठत हिलोर,
पुरवा के झोकवा से आयो रे संदेशवा कि चले आज देवा की ओर।”

और सी.आई.डी. फिल्म का

“नदी किनारे गाँव रे, पूछ मेरा क्या नाम रे
पीपल डोले मोरे अंगना ठंडी-ठंडी छाँव रे।”

सुनते हैं तो खुशी से झूम उठते हैं।

मौर्यकाल से ही प्रत्येक ग्राम में पीपल का पेड़ लगाकर पेड़ के नीचे थान बनाने की परंपरा है। वैसा

थान आज भी प्रायः सभी ग्रामों में मौजूद है। मेरे गाँव के थान को भी ब्रह्म स्थान कहते हैं और यह ग्राम से पूर्व स्थित 'बड़कीपोखर' के पूर्व दक्षिण कोने पर अवस्थित है।

इस तालाब का मूल नाम "वीरसागर" है और इसी के नाम पर हमारे ग्राम का नाम "वीरसागर" हुआ। ग्राम में ये "ब्रह्मा बाबा" और "दिहबार बाबा" के नाम से विख्यात हैं। इन्हें ग्राम का रक्षक माना जाता है और किसी के यहाँ कोई भी मांगलिक उत्सव यथा पाणिग्रहण यज्ञोपवीत, मुंडन आदि हो तो, इनकी पूजा-अर्चना अनिवार्यतः की ही जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ लोग मनौती भी मानते हैं जिसे पूरा होने पर पूजा करते हैं। प्रत्येक वर्ष एक बार ग्रामीणों द्वारा चंदा संग्रह करके अनिवार्यतः पूजा किया ही जाता है। पहले जब लोग शिकार खेलने जाते थे तो यहाँ का वातावरण "शिकारी बाबा" की जय और "दिहबार बाबा" की जय के नारों से गुंज उठता था।

इसी तरह का एक स्थान ग्राम के बीच में पंडित जीवनाथ राय के आवास के समीप भी है और वहाँ भी लोग मांगलिक अवसरों पर पूजा अर्चना करते हैं।

वैसे तो ग्राम में और भी पीपल के पेड़ हैं और प्रायः हर तालाब पर पीपल के पेड़ हैं ही, किंतु विभिन्न घटनाओं के कारण कुछ पीपल के पेड़ खास रूप से चर्चित हैं। मेरे घर के समीप दक्षिण दिशा में एक तालाब है जिसे "अन्हड़ी पोखर" कहा जाता है। इसके पूर्वी किनारे पर एक पीपल का पेड़ है जहाँ बहुत समय से श्राद्ध कर्म किये जाते हैं। इसके अलावे यह स्थान पुत्र मोह का जीवन्त उदाहरण भी है। मेरे गाँव के लक्ष्मण ठाकुर असमय कालकलवित हो गये। उनके देहांत के उपरांत उनके पिता श्री खट्टर ठाकुर कभी भी अपने आवास पर नहीं गये, सदैव इसी वृक्ष के नीचे चारपाई डाल कर पड़े रहते थे और यहीं से उन्होंने परलोक की यात्रा की इस वृक्ष के नीचे पहले श्री फूचन झा, बुआ झा और उनके मित्रों का जमावड़ा रहा करता था।

अब मैं आपको "अन्हड़ी पोखर" से ग्राम के पश्चिम की ओर अवस्थित "पनपीबी पोखर" पर ले चलता हूँ। इसके उत्तर और दक्षिण के दोनो किनारों पर पीपल के पेड़ हैं। दक्षिण किनारे पर अवस्थित वृक्ष ज्यादा घना है जहाँ गर्मी के मौसम में जानवरों का जमावड़ा रहता है और उत्तर के किनारे पर अवस्थित वृक्ष 'घुसकी पट्टी' और "कुम्हार टोली" के निवासियों का सार्वजनिक स्थल है। इसी के नीचे हमारे गाँव के धोबी सब भी कपड़ा साफ करने के उपरांत विश्राम किया करते हैं। यह वृक्ष हमें सरयुग कामत की याद दिला देता है।

मेरे गाँव का केंद्र है "भगवानक घर", जहाँ जन्माष्टमी बहुत ही धूम धाम से मनाई जाती है। भगवान की मूर्ति बनाने के लिये देवालय बने हुये हैं और इस आलय के उत्तर और पूरब दोनों तरफ एक-एक पीपल का पेड़ है। उत्तर दिशा में वृक्ष के स्थान पर पहले पाकर का एक विशाल पेड़ था जिस हेतु इस स्थान को पाकरितर भी कहा जाता है। इस पेड़ के नीचे कई दुकाने हैं। शाम के समय यहाँ बहुत सारे व्यक्तियों की बैठक जम जाती है। चुनाव के समय इसकी महत्ता बहुत बढ़ जाती है। क्योंकि इसके नीचे विभिन्न दलों के कार्यकर्ता अपना आसन जमा कर मतदाताओं को अपने पक्ष में लाने का विविध प्रयास करते देखे जाते हैं।

पूरब के तरफ एक पीपल का पेड़, एक कदम्ब का पेड़ और एक बरगद का पेड़ एक सीधी रेखा में है। ये सभी पेड़ श्री रमाकान्त झा के यादगार हैं, क्योंकि उन्होंने ही इन्हें यहाँ लगाया था। अब तो पीपल के पेड़ के समीप एक रंगमंच का निर्माण हो गया है किन्तु पहले यहाँ एक अखाड़ा था, जिसमें कई पीढ़ियों के पहलवानों ने अपना पराक्रम दिखाया था। पहलवानों में अग्रगण्य नाम है श्री मुनीन्द्र किशोर झा का। उनके समय के अन्य पहलवान थे, श्री बटुकी झा, शिवनन्दन झा, जीवन खलीफा, कुदरत, मेहीलाल, घानामिश्र एवं रामेश्वर मिश्र इनमें हमने सिर्फ अंतिम तीन को देखा है, शेष अन्य हमारे होश सम्भालने से पहले ही सुरलोक सिधार गये थे।

उनलोगों की परंपरा को श्री सीताराम झा, विश्वम्भर झा, बौध झा, लक्ष्मीकान्त झा, बेचन मुखिया, लालधर पासवान फरजन्द और महबूब आदि ने आगे बढ़ाया। जब हमने होश सम्भाला था तो वह गेनी खलीफा का जमाना था। उस समय के अन्य पहलवान थे सरूप मुखिया, भोला झा, शंकर झा, महाकांत झा, रमाकांत झा, श्रीदेव झा, सरयुग बैठा, अशफ़ी दास चलफिर मुखिया, बेला मुखिया, बनारसी, अब्बु नईम आदि। अब तो पहलवानी समाप्त प्रायः है परंतु “जुड़ शीतल” पर्व के दिन आज भी यहाँ जमा होते हैं और उस जगह की मिट्टी को लेकर पुरानी यादों को ताजा करते हैं।

इस स्थान का मुख्य आकर्षण है जन्माष्टमी का त्यौहार। भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति के साथ-साथ अनेक देवी देवताओं के मूर्तियों का निर्माण होता है, पूजा होती है, अत्यधिक धूम-धाम से उत्सव मनाये जाते हैं, तदुपरांत विसर्जन के बाद लोग उन मूर्तियों को लेकर “भतहा पोखर” की ओर चल पड़ते हैं। वहाँ भी तालाब के पश्चिमी किनारे पर एक विशालकाय पीपल का पेड़ है। यह तालाब हमारे गाँव के एक गणमान्य व्यक्ति श्री अपूछ झा का अमिट धरोहर है। यहाँ पर फिर सभी जमा होते हैं, नर्तक “समदाउन” गाते हैं और लोग प्रतिमा को जल में प्रवाहित करके सत्यनारायण नाम सार्थक कर देते हैं।

प्राचीन काल में आर्य जाति शत्रुओं के विनाश के लिए पीपल की आराधना करती थी। आज भी लोगों का विश्वास है कि इसकी आराधना से अनिष्टों का शमन, दुष्ट ग्रहों की शांति, सुख सौभाग्य की प्राप्ति और सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं। आइये अपनी उन्नति के लिए हम भी इसे प्रणाम करें-

“मूलं ब्रह्मा त्वचो विष्णु शाखा महेश्वरः
पत्राणि देवता सर्वा वृक्षराज नमोस्तुते।”



मत निकल



बिन्चु कुमार (लेखाकार)

जी. ई.- 1 अनुभाग

शत्रु कोरोना अदृश्य है
विनाश इसका लक्ष्य है
कर ना तू भूल, तू जरा भी ना फिसल
मत निकल, मत निकल, मत निकल

हिला रखा है विश्व को
रुला रखा है जन मानस को
फूंक कर बढ़ा कदम, जरा संभल
मत निकल, मत निकल, मत निकल

उठा जो एक गलत कदम
कितनों का घुटेगा दम
तेरी जरा सी भूल से
देश जाएगा दहल
मत निकल, मत निकल, मत निकल
संतुलित व्यवहार कर
बन्द तू किवाड़ कर
घर में बैठ, इतना भी
तू ना मचल
मत निकल, मत निकल, मत निकल....



प्रतिकृति



निखिल नितेश
C/o डॉ. शिप्रा शालिनी

किसी शहर में एक मशहूर चित्रकार रहता था। चित्रकार ने एक बहुत सुंदर तस्वीर बनाई और उसे नगर के चौराहे में लगा दिया और नीचे लिख दिया कि जिस किसी को, जहाँ भी इसमें कमी नजर आये वह वहाँ निशान लगा दे।

जब उसने शाम को तस्वीर देखी उसकी पूरी तस्वीर कमी नजर आने के कारण निशानों से खराब हो खुकी थी। यह सब देखकर वह बहुत दुखी हुआ उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे वह दुःखी बैठा हुआ था।

उसी समय चित्रकार के एक मित्र ने उसे देखा और उसने उसके दुःखी होने का कारण पूछा तो उसे पूरी घटना बताई।

उसने कहा एक काम करो कल तुम दूसरी तस्वीर बनाना और उसमें लिखना कि जिस किसी को इस तस्वीर में जहाँ कहीं भी कमी नजर आये उसे सही कर दे।

अगले दिन चित्रकार ने वैसा ही किया। शाम को जब उसने अपनी तस्वीर देखी तो उसने देखा की तस्वीर पर किसी ने कुछ भी नहीं किया।

वह संसार की इस रीति को समझ गया। कमी निकालना, निंदा करना, बुराई करना आसान है लेकिन उन कमियों को दूर करना बहुत कठिन होता है।

यही जिंदगी है जब दुनिया कहती है कि “हार मान लो” तो आशा धीरे से कान में कहती है कि एक बार फिर से प्रयास करो और यह ठीक भी है।

26 जनवरी 2022 को प्रधान महालेखाकर द्वारा झंडोतोलन कार्यक्रम



हिन्दी पखवाड़ा 2019 की झलकियाँ



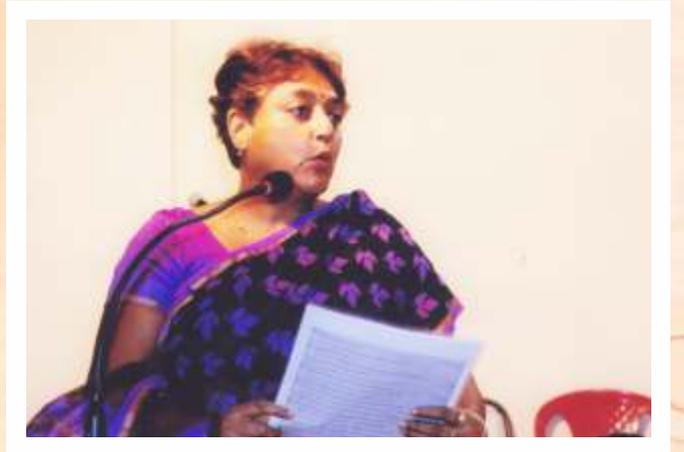
हिन्दी पखवाड़ा समारोह



मुख्य अतिथि का स्वागत



दीप प्रज्वलन



उपमहालेखाकार महोदया द्वारा हिन्दी दिवस का संदेश



लेखा एवं हकदारी एवं लेखापरीक्षा



आरंभ

**हिन्दी पखवाड़ा 2019 की आयोजित
विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों के
बीच प्रधान महालेखाकार महोदय एवं उप महालेखाकार
द्वारा पुरस्कार वितरण**



उप महालेखाकार महोदय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

झारखंड के दर्शनीय स्थल



पहाड़ी मंदिर, राँची



जगन्नाथ मंदिर, धुर्वा



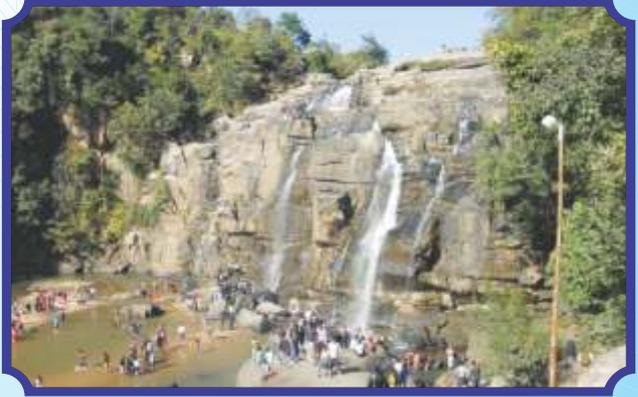
सूर्य मंदिर



बाबा वैद्यनाथ धाम, देवघर



हुन्दरु जलप्रपात



जोन्हा जलप्रपात



रॉक गार्डन, काँके, राँची



दशम फॉल